www.sgbauonline.com

AU–2029

B.A. (Part—I) Semester—I Examination
(Literature of Classical Language)
FUNCTIONAL HINDI

समय : 3 घंटे] [पूर्णांक : 80

सूचना :— सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. दीर्घोत्तरी प्रश्न–किन्हीं (दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए।) :–

(अ) 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' का सामान्य परिचय देते हुए, प्रयोजनमूलक हिन्दी की उपादेयता सिद्ध कीजिए। 16

अथवा

हिन्दी वर्तनी का 'मानकीकरण' करने में किन-किन संस्थाओं ने योगदान दिया ? उनका परिचय दीजिए।

(आ) प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसके क्षेत्रों पर प्रकाश डालिए। 16

अथवा

मानकीकरण की प्रक्रिया पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

2. दीर्घोत्तरी प्रश्न–(किसी एक प्रश्न उत्तर लिखिए।) :– 16

कुशल पल्लवन के गुण बताते हुए 'थोथा चना बाजे घना' इस लोकोक्ति का पल्लवन कीजिए।

अथवा

कार्यालय ज्ञापन का सोदाहरण परिचय दीजिए।

3. लघूत्तरी प्रश्न (किसी एक समूह के चारों प्रश्नों के उत्तर लिखिए।) :– 4×4=16

(अ) हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण स्पष्ट कीजिए।

(आ) प्रयोजनमूलक हिन्दी की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

(इ) अनुस्मारक एवं विज्ञप्ति का सामान्य परिचय दीजिए।

(ई) निम्नलिखित किसी एक उक्ति का कल्पना-विस्तार (पल्लवन) कीजिए :–

(i) "करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान"

(ii) "दुःख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे को होय।।"

अथवा

(उ) प्रयोजनमूलक हिन्दी की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए प्रयोजनमूलक हिन्दी के नामकरण पर प्रकाश डालिए।

(ऊ) मानक भाषा की प्रवृत्तियों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

(ए) अनुस्मारक एवं विज्ञप्ति का प्रारूप तैयार कीजिए।

www.sgbauonline.com

www.sgbauonline.com

(ङ) निम्नलिखित अवतरण का संक्षेपण अपने शब्दों में लिखिए :–

आधुनिक मनुष्य मूलतः बुद्धिवादी और विश्लेषण प्रिय है, जिसमें ज्ञान की अपार महिमा है, परन्तु हृदय के स्रोत निरन्तर सूखते जा रहे हैं, जिसे शिक्षा कहकर चलाया जा रहा है, वह सूचना मात्र है, उसमें अनुभूति को जगह नहीं मिली है। फलतः आज का शिक्षित मनुष्य व्यर्थता में घर गया है कविता का स्रोत है–आनंद, जिज्ञासा एवं रहस्य। हमारे ज्ञान की परिधि इतनी विस्तृत हो गई है कि कुछ भी अप्रत्याशित नहीं रह गया है। काव्य-पंक्तियाँ आज हास्यास्पद लगने लगती हैं। अद्भुत का थोड़ा भी स्पन्दन जीवन में शेष नहीं रह गया है। वैसे ज्ञान और कविता में निरन्तर विरोध ही हो, यह आवश्यक नहीं, क्योंकि विज्ञान रहस्योन्मुखी है, इसमें जिज्ञासा और समाधान के अनेक सूत्र हैं, परन्तु आज विज्ञान विशेषता के उस संसार में पहुँच गया है, जहाँ तालिकाओं का राज्य है और मानव शिशु तथ्यों की मरुभूमि में खो गया है। फल यह हुआ कि हम अहं के स्तूप बन गए हैं, हम चमत्कृत होने में मानहानि समझते हैं। हमारी सहज अन्तर्दृष्टियाँ जड़ होती जा रही हैं।

4. वस्तुनिष्ठ/अतिलघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लिखिए – 16×1=16

(1) अंग्रेजी शब्द फंक्शनल (Functional) का हिंदी पर्याय _____ है। (प्रयोजनिक, प्रयोजनमूलक)

(2) केंद्रीय हिंदी निदेशालय के द्वारा 'हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' शीर्षक पुस्तिका कब प्रकाशित हुई।

(3) मानकीकरण के प्रयासों का प्रथम चरण किससे शुरू होता है ?

(4) देवनागरी लिपि में पहला संस्थागत प्रयास किसके द्वारा हुआ ?

(5) संस्कृत के विद्वान और हिन्दी पंडित दोनों संस्कृत और हिंदी की वर्तनी में अभेद मानते थे।
(सत्य/असत्य)

(6) हिन्दी लेखन में ज-ज़, ख-ख़ और फ-फ़ का भेद धीरे-धीरे घटता जा रहा है। (सत्य/असत्य)

(7) Hall, Pass, Pool, Post व Shot इन शब्दों को देवनागरी लिपि में लिखिए

(8) संक्षेपण में क्रमबद्धता होनी चाहिए। (सत्य/असत्य)

(9) सम्बोधन करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

(10) 'मन पछितइहै, अवसर बीते' किसकी उक्ति है।

(11) विज्ञापनों के तीन माध्यमों का उल्लेख कीजिए।

(12) वाणिज्य क्षेत्र की शब्दावली का प्रयोग करके प्रयोजनमूलक हिंदी का उदाहरण लिखिए।

(13) बाबूराव विष्णु पराड़कर कौन थे ?

(14) सरकारी-पत्र में पत्र-संख्या कहां लिखी जाती है ?

(15) परिपत्र का स्वरूप सरकारी पत्र तथा ज्ञापन जैसा ही होता है। (सत्य/असत्य)

(16) कार्यालयीन आदेश में सम्बोधन नहीं रहता। (सत्य/असत्य)

www.sgbauonline.com